अपने विचारों
में ताकत रखों,
आवाज में नहीं।
– अज्ञात

स्टूडेंट्स ने चैन की सांस ली

सिर्फ मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजेस में फर्स्ट ईयर के बैच हवा में हैं। महीने–दर–महीने आगे खिसकते हुए आधा सेमेस्टर पार हो गया। दोनों टेस्ट अगर इसी तरह कुछ और आगे टल गए तो अगला बैच आने से पहले इस सत्र का कोर्स कवर करना असंभव हो जाएगा।

मनमोहन नेगी।

इंजीनियरिंग और मेडिकल की प्रवेश परीक्षाओंदृ जेईई और एनईईटी की तारीखें आगे खिसकाने की याचिकाएं खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ये परीक्षाएं सितंबर में घोषित तारीखों पर ही ली जाएंगी। इस फैसले से देश के दोनों सबसे महत्वपूर्ण अंडरग्रैजुएट एंट्रेंस टेस्ट्स को लेकर बनी हुई अनिश्चितताएं खत्म हो गई हैं और लाखों स्टूडेंट्स ने चैन की सांस ली है।

कोरोना महामारी के कारण बनी असामान्य स्थितियों की वजह से ये परीक्षाएं पहले ही दो बार स्थगित की जा चुकी हैं। हालांकि देश में कोरोना का प्रकोप अब भी कम नहीं हुआ है और तमाम बुरी खबरों के बीच इन परीक्षाओं को लेकर छात्रों और उनके अभिभावकों में चिंता होनी स्वाभाविक है। परीक्षा केंद्रों पर बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स का इकट्ठा होना उनके लिए निश्चित रूप से खतरनाक है। परीक्षाओं को और आगे खिसकाने की अर्जी लेकर कोर्ट पहुंचे स्टूडेंट्स की बेचैनी को अदालत ने भी रेखांकित किया है। लेकिन दूसरी तरफ एक पूरा साल बर्बाद हो जाने की आशंका और अगले साल एक और बैच आ जाने के दबाव की भी अनदेखी नहीं की जा सकती, जिसका सामना इस साल 12वीं पास करने वाले लाखों स्टूडेंट्स कर रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान चौबीसों घंटे घर में बंद रहने की मजबूरी और चारों तरफ से मिल रही निराशाजानक खबरों के बीच अनिश्चितता की तलवार उनके करियर और भविष्य पर लटक रही है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि यह कोई सामान्य समय नहीं है और कुछ महीनों की देरी से आसमान नहीं टूट पड़ेगा। लेकिन उनकी नजर शायद पूरे परिदृश्य पर नहीं है। अगस्त बीतने को है।

इंजीनियरिंग और मेडिकल के एंट्रेंस टेस्ट ही नहीं हो पाए हैं, जबकि हर तरह के ग्रैजुएशन कोर्सेज में दूसरे साल की पढ़ाई ऑनलाइन माध्यम से शुरू भी हो चुकी है। सबकी कोशिश है कि सेशन लेट न हो और जितना भी संभव हो, अकादमिक गतिविधियां चलती रहें। सिर्फ मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजेस में फर्स्ट ईयर के बैच हवा में हैं। महीने–दर–महीने आगे खिसकते हुए आधा सेमेस्टर पार हो गया। दोनों टेस्ट अगर इसी तरह कुछ और आगे टल गए तो अगला बैच आने से पहले इस सत्र का कोर्स कवर करना असंभव हो जाएगा।

ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के सामने कोई विकल्प ही नहीं बचा था। बीमारी का खतरा अपनी जगह है और लोगों के स्वास्थ्य का सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सुरक्षा के सारे उपाय करने के निर्देश अदालत ने सरकार और परीक्षा आयोजित करने वाली संस्थाओं को दिए हैं। लेकिन बड़े से बड़े खतरे के बावजूद मानव समाज की गति को थमने नहीं दिया जा सकता। एक पूरे साल देश को नए डॉक्टर और इंजीनियर न मिलें और युवाओं से उनके सपनों का आसमान छिन जाए, यह स्थिति हरगिज मंजूर नहीं की जा सकती। सुप्रीम कोर्ट ने सही कहा है कि हर संभव सावधानी बरती जाए, लेकिन परीक्षा अब और न टाली जाए। उम्मीद है कि इस फैसले के तर्क और इसकी भावना के अनुरूप अन्य प्रवेश परीक्षाओं को भी अब और टालने से बचा जाएगा।

सबसे सुंदर सुबह में

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। वह रात मेरे लिए अजीब गुजरी थी। नींद भी देर से आई लेकिन किताब के रूप में इसका इलाज मेरे पास था। ज्यादा बड़ी परेशानी कई बार आए वे झोंके थे, जिनमें खुद को नीचे गिरता हुआ पाकर नींद टूट जा रही थी। कुल डेढ़–दो घंटे ठीक से सो पाया कि तेज शोर से बुरी तरह जग पड़ा। क्या हो गया? दरवाजा खोलकर बाहर निकला तो अद्भुत दृश्य सामने था। झमाझम हो रही बड़ी–बड़ी बूंदों वाली बारिश और दूधिया रोशनी में झूम रहे चौड़े पत्तों वाले पेड़। मंत्रमुग्ध होकर मैं वहीं बैठ गया। घड़ी भी नहीं देखी कि वक्त क्या हुआ है। कुछ देर बाद फोन देखा तो 4.38 दिखा रहा था। नहा–धोकर बाहर आया तो बारिश कम होकर बूंदाबांदी तक सिमट आई थी। लेकिन दूधिया रोशनी के उस बड़े–से बुलबुले के बाहर अंधेरा वैसे का वैसा घुप्प बना हुआ था।

संपादकीय

जमीन खिसकने का अहसास

मैं मायावती से उनके आवास पर एक बार उनसे मिला। कुछ हफ्ते पहले ही बीएसपी कार्यकर्ताओं ने हमारे ओबी वैन को तोड़ दिया था। वे मायावती की अघोषित संपत्ति पर हमारे चैनल की स्टोरी से नाराज थे। मुझे आग्रह से मायावती ने लिमका और काजू खाने को कहा। इसके बाद वह मीडिया पर बरस पड़ीं। बोलीं, 'आप लोगों को शर्म आनी चाहिए। कुछ भी दिखाते हो अनाप–शनाप।' उनकी बातों में तनिक भी अफसोस नहीं था कि उनके कार्यकर्तओं ने किस तरह हमारे चौनल के साथ तोड़–फोड़ की थी। जब हम बातचीत कर रहे थे तो सीनियर अधिकारी उनके सामने खड़े थे। डरे हुए। किसी में मायावती की ओर सीधे देखने तक की हिम्मत नहीं लग रही थी। जनवरी 2014 में मायावती को एक पुराने केस ने फिर परेशानी में डाला। सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफ कमाई से अधिक संपत्ति के मामले में जांच शुरू करने का रास्ता खोल दिया। तभी खबर आई कि मायावती केस से बचने के लिए कांग्रेस से कोई डील कर रही हैं। तब राहुल गांधी ने कांग्रेस–बीएसपी गठबंधन नहीं होने दिया। उस साल आम चुनाव में अमित शाह ने मुझसे कहा कि इस बार बीएसपी बैठ गई है। चुनाव ही नहीं लड़ रही है। वह सही थे। पिछले बीस सालों में बीएसपी का इतना ठंडा और दिशाहीन चुनावी कैंपेन मैंने नहीं देखा था। मायावती को भी अहसास हो चुका था कि उनकी जमीन खिसक रही है। यह जमीन बचाने की कोशिश उन्होंने आम चुनाव से अधिक 2017 के यूपी विधानसभा चुनावों में की।

इससे भारतीय सेनाएं न केवल विदेशी हथियारों पर अपनी निर्भरता समाप्त करेंगी बल्कि युद्ध के वक्त किसी देश द्वारा शस्त्र प्रणालियों की सप्लाई रोक देने के खतरे से भी बची रहेंगी।

अबूझ पहेली थीं वह

राजदीप सरदेसाई।।

2009 आते–आते राहुल गांधी राष्ट्रीय राजनेता के रूप में स्थापित हो चुके थे। यह अलग बात थी कि तब तक अमेठी के बाहर वोट लाने की क्षमता की कोई मिसाल साबित नहीं हुई थी। 2004 में कांग्रेस के पोस्टर में सिर्फ सोनिया दिखती थीं लेकिन 2009 आते–आते इसमें राहुल और मनमोहन सिंह भी जुड़ गए। इस समय तक राहुल का आत्मविश्वास भी बढ़ गया था। वह मुझे मुंबई में चुनाव प्रचार के दौरान मिले और मजबूती से कहा– हम जीत रहे हैं और अच्छे तरीके से जीत रहे हैं। 1984 के बाद पहली बार कांग्रेस ने अपना सबसे बेहतर प्रदर्शन करते हुए 206 सीटें हासिल की थीं। उस जीत का क्रेडिट कांग्रेस ने राहुल गांधी को दिया। परिणाम के दिन जो भी नेता टीवी स्टूडियो में आए, जीत के लिए राहुल के नेतृत्व को सबसे अहम योगदान देने वाला बताया।

खासकर उत्तर प्रदेश में 21 सीटों पर मिली जीत को राहुल के युवराज के रूप में उभरने का सबसे बड़ा सबूत माना गया। तभी लगभग हर कांग्रेस नेता कहते– बस एक–दो साल की बात है, मनमोहन सिंह की जगह राहुल ले लेंगे। वहीं पार्टी में दूसरा समूह ऐसा था जो चाहता था कि पहले राहुल मनमोहन सरकार में बतौर मंत्री शामिल हों। इनकी चाहत थी कि या तो एचआरडी या ग्रामीण विकास मंत्रालय का प्रभार राहुल संभालें। इन दोनों से जुडे मसलों में राहुल रुचि ले रहे थे। लेकिन राहुल ने सपाट तरीके से इस प्रस्ताव को मना कर दिया। तब उन्होंने कहा कि उनका अभी एकसूत्री अजेंडा है यूथ कांग्रेस और एनएसयूआई को जीवित करना। ऐसा नहीं है कि तब सिर्फ कांग्रेस के अंदर राहुल गांधी की तारीफ हो रही थी। मीडिया के अंदर भी राहुल गांधी को लेकर उम्मीदें बन रही थीं। तब हमारे चौनल के इंडियन ऑफ दि इयर का पुरस्कार राजनेता कैटिगरी में राहुल गांधी को दिया गया था।

बाद में अहसास हुआ कि हम सब गलत थे। यह सही था कि राहुल ने बहुत मेहनत की थी। यह भी सही था कि गांधी परिवार ने यूपी में कांग्रेस को एसपी–बीएसपी का राष्ट्रीय विकल्प बनने में मदद की। लेकिन 2009 में जीत का असली क्रेडिट मनमोहन सिंह को जाना चाहिए था। खैर, इंडियन ऑफ दि इयर का अवॉर्ड शो जिस दिन था उस दिन सभी अतिथि आए। खुद पीएम मनमोहन सिंह भी थे। ए आर रहमान, साइना नेहवाल सहित जिसे भी सम्मान मिलना, वे सभी उपस्थित थे। लेकिन राहुल नहीं आए। हमने उनसे पिछले कई दिनों से आग्रह किया था कि वे जरूर आएं। उनकी बहन प्रियंका से भी कहा कि वे राहुल से आग्रह करें कि वह जरूर आएं। यह भी कहा कि जब पीएम मनमोहन सिंह खुद मौजूद रहेंगे तब राहुल का नहीं आना अच्छा नहीं लगेगा। जिस दिन अवॉर्ड शो था, उस दिन राहुल दिल्ली में थे लेकिन नहीं आए। क्यों नहीं आए? प्रियंका ने कहा कि राहुल पुरस्कार में विश्वास नहीं करते। या ऐसा तो नहीं कि राहुल को अहसास हो गया था कि वे पुरस्कार के पूरी तरह हकदार नहीं थे?

मैं मायावती से पहली बार 1994 में मिला। तब मैं दिल्ली में नया–नया था और भीमराव आंबेडकर की लेखनी पर रिसर्च कर रहा था। बीएसपी के संस्थापक कांशीराम आंबेडकर के बहुत बड़े प्रशंसक थे। मैंने कांशीराम के साथ आंबेडकर की सोच और विरासत पर कई मौकों पर लंबी चर्चा की। ढीले–ढाले उजले शर्ट, गले में तौलिया और बेतरतीब पैंट में दिखने वाले कांशीराम सीधी बात करने वाले राजनेता थे।

सूडोकु नवताल-5451

मध्यम

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5450 का हल

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7

अपना ब्लॉग

वे मेरा मर्डर करना चाहते थे

मोहन। कांशीराम मायावती के बारे में हमेशा कहते कि वह एक दिन राज करेगी। वह बिल्कुल सही थे। मैं जून 1995 में लखनऊ में था जब मायावती देश की पहली महिला दलित के रूप में सीएम पद की शपथ ले रही थीं। शपथ से ठीक पहले मायावती पर एसपी के कार्यकर्ताओं ने हमला किया था जिसे स्टेट गेस्ट हाउस कांड के नाम से जाना जाता है। मायावती ने मुलायम सिंह यादव से समर्थन वापस लिया था। बाद में जब मैंने मायावती से इंटरव्यू किया और इस वाकये का जिक्र हुआ तो उन्होंने कहा, 'वे मेरा मर्डर करना चाहते थे। इनको कभी नहीं छोडूंगी। इनको सबक सिखाना पड़ेगा।' अगले दो दशक तक मायावती आक्रामक राजनीति करती रहीं। उनकी राजनीति के बारे में पहले से अनुमान लगाना मुश्किल था। वे सभी के लिए अबूझ पहेली सी रहीं। बतौर सीएम वह लॉ एंड ऑर्डर पर सख्त रहीं लेकिन जयललिता की तरह करप्शन के आरोपों से घिरी रहीं।